

शेखे एरोकता, अमीरे अहले सुन्नत, बनिये वंशों इस्लामों, हरस अल्ताना नौलान अहू क़िलाल

मुहम्मद इल्थास अत्तार क़ादिर र-ज़वी رحمۃ اللہ علیہ

के अता कदा इल्मा हिकमत भरे महके महके म-दनी फूलों का हसीन तहरीरो गुलदस्ता

Jannatiyon Ki Zabaan (Hindi)

मल्फूजाते अमीरे अहले सुन्नत (किस्त : 6)

जन्नतियों की ज़बान

(मअ दीगर दिलचस्प सुवाल जवाब)



- ◆ सब से अफ़ज़ल ज़बान ◆ एहसासे कम तरी और उस का इलाज
- ◆ चरागां पर ज़रे कसीर ख़र्च करना कैसा ? ◆ बुरे ख़ातिमे से नजात कैसे हो ?
- ◆ अन्जीर के फ़वाइद

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

किताब पढ़ने की दुआ

अज : शैखे तरीक़्त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा

मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी र-जवी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَاَنْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

तरजमा : ऐ अल्लाह! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ-ज़मत और बुजुर्गी वाले ।

(المستطرف ج ١ ص ٤٠ دار الفكر بيروت)

नोट : अव्वल आखिर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

तालिबे गुमे मदीना
व बक़ीअ
व मग़िफ़रत



13 शब्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

जन्नतियों की ज़बान

येह रिसाला (जन्नतियों की ज़बान)

दा'वते इस्लामी की मजलिस "अल मदीनतुल इल्मिय्या (शो'बए फैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)" ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब किया है ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ करवाया है । इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद
के सामने, तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात MO. 9374031409

E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

पहले इसे पढ़ लीजिये !

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰی رَبِّهِ تَبْلٰغِی تब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के बानी, शैखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी र-जवी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِیَہ ने अपने मख़सूस अन्दाज़ में सुन्नतों भरे बयानात, इल्मो हिक्मत से मा'मूर म-दनी मुज़ा-करात और अपने तरबियत याफ़ता मुबल्लिगीन के ज़रीए थोड़े ही अर्से में लाखों मुसल्मानों के दिलों में म-दनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया है, आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِیَہ की सोहबत से फ़ाएदा उठाते हुए कसीर इस्लामी भाई वक़्तन फ़ वक़्तन मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर होने वाले म-दनी मुज़ा-करात में मुख़्तलिफ़ किस्म के मौजूआत म-सलन अक़ाइद व आ'माल, फ़ज़ाइल व मनाकिब, शरीअत व तरीकत, तारीख़ व सीरत, साइन्स व तिब्ब, अख़्लाक़िय्यात व इस्लामी मा'लूमात, रोज़ मर्रा मुआ-मलात और दीगर बहुत से मौजूआत से मु-तअल्लिक़ सुवालात करते हैं और शैखे तरीकत अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِیَہ उन्हें हिक्मत आमोज़ और इश्के रसूल में डूबे हुए जवाबात से नवाज़ते हैं ।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِیَہ के इन अता कर्दा दिलचस्प और इल्मो हिक्मत से लबरेज़ म-दनी फूलों की खुशबूओं से दुन्या भर के मुसल्मानों को महकाने के मुक़द्दस जब्बे के तहत अल मदीनतुल इल्मिय्या का शो'बा "फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा" इन म-दनी मुज़ा-करात को ज़रूरी तरमीम व इज़ाफ़े के साथ "मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत" के नाम से पेश करने की सआदत हासिल कर रहा है । इन तहरीरी गुलदस्तों का मुता-लआ करने से اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ अक़ाइद व आ'माल और ज़ाहिर व बातिन की इस्लाह, महब्बते इलाही व इश्के रसूल की ला ज़वाल दौलत के साथ साथ मजीद हुसूले इल्मे दीन का जब्बा भी बेदार होगा ।

पेशे नज़र रिसाले में जो भी खूबियां हैं यकीनन रब्बे रहीम عَزَّوَجَلَّ और उस के महबूबे करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अताओं, औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की इनायतों और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِیَہ की शफ़क़्तों और पुर खुलूस दुआओं का नतीजा हैं और ख़ामियां हों तो उस में हमारी गैर इरादी कोताही का दरख़ल है ।

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

28 ज़िल का'दतिल हराम 1435 सि.हि. \ 23 सितम्बर 2014 सि.ई

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

जन्नतियों की ज़बान

(मअ दीगर दिलचस्प सुवाल व जवाब)

शैतान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (31 सफ़हात) मुकम्मल पढ़
लीजिये । إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ । मा 'लूमात का अनमोल खज़ाना हाथ आएगा ।

दुरुद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के
ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रूह
परवर है : “बेशक जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) ने मुझे बिशारत दी : जो
आप (عَزَّوَجَلَّ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पर दुरुदे पाक पढ़ता है, अल्लाह
उस पर रहमत भेजता है और जो आप (عَزَّوَجَلَّ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पर
सलाम पढ़ता है अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) उस पर सलामती भेजता है ।”¹

बेकार गुफ़्त-गू से मेरी जान छूट जाए

हर वक़्त काश ! लब पे दरूदो सलाम हो

(वसाइले बख़िशश)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّدٍ

مدینہ

..... مُسنَدِ اِحمَد، ج ۱، ص ۳۰۷، حدیث ۱۶۲۳، دَارُ الْفِکْرِ بیروت

1

अल्लाह मियां कहना कैसा ?

अर्ज : अल्लाह मियां कह सकते हैं या नहीं ?

इर्शाद : नहीं कह सकते । अल्लाह तआला या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ या अल्लाह पाक कहें । मेरे आकाए ने'मत, आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजहिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : “ज़बाने उर्दू में लफ़्ज़ “मियां” के तीन मा'ना हैं । इन में से दो ऐसे हैं जिन से शाने उलूहिय्यत (अल्लाह तआला की शान) पाक व मुनज़्ज़ह है और एक का सिद्क़ हो सकता है । तो जब लफ़्ज़ दो ख़बीस मा'नों में और एक अच्छे मा'ना में मुश्तरक ठहरा और शर-अ में वारिद नहीं तो जाते बारी (عَزَّوَجَلَّ) पर इस का इत्लाक़ मम्मूअ होगा । इस के एक मा'ना “मौला” है । बेशक मौला अल्लाह है, दूसरे मा'ना “शोहर”, तीसरे मा'ना “ज़िना का दलाल” कि ज़ानी और ज़ानिया में मु-तवस्सित (दरमियान वाला) हो ।”¹

जन्नत में बोली जाने वाली ज़बान

अर्ज : जन्नत में कौन सी ज़बान बोली जाएगी ?

इर्शाद : जन्नत में अ-रबी ज़बान बोली जाएगी । अ-रबी ज़बान हमारे प्यारे आका صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने रफ़ीउश्शान ^{مدینه}

- 1मल्फूज़ाते आ'ला हज़रत, स. 174, मक-त-बतुल मदीना, बाबुल मदीना कराची

भी है चुनान्चे खा-तमुन्नबिय्यीन, साहिबे कुरआने मुबीन, महबूबे रब्बुल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने दिल नशीन है : अहले अरब से तीन वजह से महबूबत करो : (1) मैं अ-रबी हूँ (2) कुरआने मजीद अरबी में है (3) अहले जन्नत का कलाम अ-रबी में होगा ।¹

❀ मरने के बा'द अ-रबी ज़बान में सुवाल जवाब ❀

अर्ज़ : जो अ-रबी ज़बान नहीं जानता वोह जन्नत में अ-रबी ज़बान कैसे बोलेगा ?

इश्आद : मरने के बा'द हर एक को अ-रबी ज़बान आ जाती है । क़ब्र में मुन्कर नकीर अ-रबी ज़बान में ही सुवालात करते हैं और मुर्दा उन सुवालात को समझता है और अ-रबी ज़बान में जवाबात भी देता है जैसा कि हज़रते सय्यिदुना बराअ बिन अज़िब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हम हुजुरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के साथ एक अन्सारी के जनाजे में शरीक हुए और उस की क़ब्र तक गए । जब उन्हे लहूद में उतारा गया तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तशरीफ़ फ़रमा हो गए, हम भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के इर्द गिर्द बैठ गए गोया हमारे सरों पर परिन्दे बैठे हुए हैं, सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के हाथ मुबारक में एक लकड़ी थी जिस से ज़मीन कुरेद रहे थे ।

4

मदीन

❀ مُسْتَدْرَك حَاكِم، ج ٥، ص ١١٤، حَدِيث ٤٠٨١، دَاهِرُ الْمَعْرِفَةِ بِيْرُوت ❶

फिर अपना सरे अक्दस उठाया और दो या तीन मर्तबा फ़रमाया : अज़ाबे क़ब्र से **اَللّٰهُ** की पनाह मांगो । हज़रते सय्यिदुना हन्नाद **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ** फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने फ़रमाया : (क़ब्र में मय्यित के पास) दो फ़िरिश्ते आते हैं, उसे बिठाते और सुवाल करते हैं : **مَنْ رَبُّكَ ؟** तेरा रब कौन है ? वोह जवाब देता है : **رَبِّيَ اللّٰهُ** मेरा रब **اَللّٰهُ** है । फिर वोह पूछते हैं : **مَا دِينُكَ ؟** तेरा दीन क्या है ? वोह जवाब देता है : **دِينِي الْاِسْلَامُ** मेरा दीन इस्लाम है । फिर वोह उस से पूछते हैं : **مَا هَذَا الرَّجُلُ الَّذِي بُعِثَ فِيْكُمْ ؟** जो हस्ती तुम्हारी तरफ़ मब्रुस फ़रमाई गई वोह कौन हैं ? ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने फ़रमाया : वोह जवाब देता है : **هُوَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** : वोह रसूलुल्लाह **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** हैं । फिर फ़िरिश्ते कहते हैं : तुझे इन बातों का कैसे पता चला ? वोह जवाब देता है कि मैं ने किताबुल्लाह पढ़ी, इस पर ईमान लाया और इस की तस्दीक़ की । फिर आस्मान से निदा दी जाती है : **قَدْ صَدَقَ عَبْدِي** मेरा बन्दा सच कहता है, इस के लिये जन्नत से एक बिछोना बिछा दो और इसे जन्नती लिबास पहना दो और इस के लिये जन्नत की तरफ़ एक दरवाज़ा खोल दो ताकि इसे जन्नत की हवा और खुशबू आती रहे और उस के लिये क़ब्र को ता हद्दे नज़र कुशादा कर दिया जाता है ।

फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने काफ़िर की मौत का जिक्र किया और फ़रमाया : (क़ब्र में जाने के बा'द) काफ़िर की रूह को उस के जिस्म में लौटाया जाता है उस के पास दो फ़िरिश्ते आते हैं, उसे उठाते हैं और उस से कहते हैं : مَنْ رَبُّكَ؟ तेरा रब कौन है ? वोह जवाब देता है : هَاةَ هَاةَ لَا أَدْرِي अफ़सोस ! मैं कुछ नहीं जानता । फिर उस से पूछते हैं : مَا وَبِئِكَ؟ या'नी तेरा दीन क्या है ? वोह जवाब देता है : هَاةَ هَاةَ لَا أَدْرِي अफ़सोस ! मैं कुछ नहीं जानता । फिर वोह उस से पूछते हैं : مَا هَذَا الرَّجُلُ الَّذِي بُعِثَ فِيكُمْ؟ जो हस्ती तुम्हारी तरफ़ मब्रुस फ़रमाई गई वोह कौन हैं ? वोह जवाब देता है : هَاةَ هَاةَ لَا أَدْرِي अफ़सोस ! मैं कुछ नहीं जानता । फिर आस्मान से निदा दी जाती है कि येह झूट कहता है, इस के लिये जहन्नम से एक बिस्तर बिछा दो, आग का लिबास पहना दो और जहन्नम की तरफ़ एक दरवाज़ा खोल दो पस उसे जहन्नम की गरमी और बदबू आती रहेगी और उस पर क़ब्र को तंग कर दिया जाएगा हत्ता कि उस की पस्लियां एक दूसरे में पैवस्त हो जाएंगी । हृदीसे जरीर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ में येह भी है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : फिर उस पर एक अन्धा बहरा फ़िरिश्ता मुक़र्रर कर दिया जाएगा जिस के पास लोहे का ऐसा गुर्ज (हथोड़ा) होता है कि जिस को पहाड़ पर मारा जाए तो वोह मिट्टी हो जाए पस वोह उस के साथ मुर्दे को



एक ज़र्ब लगाएगा तो उस की आवाज़ जिनो इन्स (या'नी जिन्नात और इन्सानों) के इलावा हर एक सुनेगा जिस से (काफ़िर) मुर्दा खाक हो जाएगा फिर उस में दोबारा रूह डाली जाएगी।¹ मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَلَأَنِ फ़रमाते हैं : बा'दे मौत हर शख़्स तहरीर पढ़ सकता है। जहालत इस आलम (या'नी दुन्या) में हो सकती है, वहां नहीं। हदीसे पाक में है : **كَلَامُ أَهْلِ الْجَنَّةِ عَرَبِيٌّ** : या'नी अहले जन्नत की ज़बान अ-रबी है।² हालां कि बहुत से जन्नती दुन्या में अ-रबी से ना वाकिफ़ हैं। इसी तरह हर मुर्दे से अ-रबी में मलाइका सुवाल करते हैं और वोह अ-रबी समझ लेता है। रब तआला ने मीसाक़ के दिन अ-रबी ही में सब से अहदो पैमान लिया तो क्या मरने के बा'द मय्यित को किसी मद्रसे में अ-रबी पढ़ाई जाती है ? नहीं बल्कि खुद ब खुद आ जाती है। क़ियामत के दिन सब को नामए आ'माल लिखे हुए ही दिये जाएंगे और जाहिल व आलिम सब ही पढ़ेंगे। जिस से मा'लूम होता है कि मरने के बा'द हर शख़्स अ-रबी समझता है और लिखा हुवा पढ़ लेता है।³

مدینہ ① أبوداؤد، ج ۴، ص ۳۱۶، حدیث ۴۷۵۳، دار احیاء التراث العربی بیروت

② جامع صغیر، ص ۲۰، حدیث ۲۲۵، دار الکتب العلمیة بیروت

③ जाअल हक़, स. 348, नईमी कुतुब ख़ाना, गुजरात



सब से अफ़ज़ल ज़बान

अर्ज : सब से अफ़ज़ल ज़बान कौन सी है ?

इर्शाद : तमाम ज़बानों में सब से अफ़ज़ल अ-रबी ज़बान है कुरआने पाक भी अ-रबी ज़बान में नाज़िल हुवा और जन्तियों की ज़बान भी अ-रबी होगी चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना अल्लामा अलाउद्दीन मुहम्मद बिन अली हस्कफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : अ-रबी ज़बान को दूसरी तमाम ज़बानों पर फ़ज़ीलत हासिल है कि येह अहले जन्नत की ज़बान होगी पस जिस ने इसे सीखा और दूसरे को सिखाया उसे अज़्रो सवाब मिलेगा कि हदीसे पाक में है : अहले अरब से तीन वजह से महब्बत करो : मैं अ-रबी हूं, कुरआने मजीद अ-रबी में है और जन्नत में जन्तियों की ज़बान अ-रबी होगी ।¹

सदरुशशरीअह, बदरुत्तरीक़ह हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : येह जो कहा गया सिर्फ़ ज़बान के लिहाज़ से कहा गया वरना एक मुस्लिम (मुसल्मान) को खुद सोचने की ज़रूरत है कि अ-रबी ज़बान का जानना मुसल्मानों के लिये कितना ज़रूरी है, कुरआनो हदीस और दीन के तमाम उसूल व फ़ुरूअ इसी ज़बान में हैं इस ज़बान से ना वाकिफ़ी

..... ① دُرِّمَخْتَار، ج ٩، ص ٢٩١، دَارُ الْمَعْرِفَةِ بِيْرُوتِ مَدِينِ

कितनी कमी और नुक़सान की चीज़ है ।¹

❀ चरागां पर ज़रे कसीर खर्च करना कैसा ? ❀

अर्ज़ : जश्ने विलादत के मौक़अ पर चरागां पर ज़रे कसीर खर्च किया जाता है, क्या येह इसराफ़ (फुज़ूल खर्ची) नहीं ?

इर्शाद : जश्ने विलादत के मौक़अ पर चरागां पर ज़रे कसीर खर्च करना हरगिज़ फुज़ूल खर्ची नहीं । उ-लमाए किराम **لَا خَيْرَ فِي الْإِسْرَافِ، وَلَا إِسْرَافٍ فِي الْخَيْرِ** : " **فَرَمَاتे हैं :** या'नी इसराफ़ में भलाई नहीं और भलाई में इसराफ़ नहीं ।" जिस शै से ता'जीमे ज़िक्र शरीफ़ मक्सूद हो, हरगिज़ मम्नूअ नहीं हो सकती ।² **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की रिज़ा के लिये जो सरमाया खर्च किया जाए वोह इसराफ़ नहीं कहलाता, चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़्ख़दीन राज़ी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي** नक़ल करते हैं : हज़रते सय्यिदुना इमाम शहाबुद्दीन जोहरी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي** पारह 8 सू-रतुल अन्ज़ाम की आयत नम्बर 141 **﴿وَلَا تُسْرِفُوا﴾** (तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और बे जा न खर्चों) की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की मा'सियत या'नी ना फ़रमानी में खर्च न करो । हज़रते सय्यिदुना इमाम मुजाहिद **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِد** फ़रमाते हैं : अगर कोहे अबी कुबैस सोने का हो और कोई

❶..... बहारे शरीअत, जि. 3, स. 653, मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची

❷..... मल्फूज़ाते आ'ला हज़रत, स. 174



शख्स उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इताअत में खर्च कर दे तो वोह इसराफ़ करने वाला न होगा और एक दिरहम भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मा'सियत (ना फ़रमानी) में खर्च करे तो इसराफ़ (फुज़ूल खर्ची) करने वाला होगा ।¹

इसी तरह तफ़्सीरे नस्फ़ी में पारह 15 सूरए बनी इस्राईल की आयत नम्बर 26 ﴿وَلَا تُبْذِرْ مَالَكَ تَبْذِيرًا﴾ (तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और फुज़ूल न उड़ा) के तहत है कि किसी शख्स ने भलाई के कामों में कसीर माल खर्च कर दिया तो उस के दोस्त ने उसे कहा : لَا خَيْرَ فِي السَّرَفِ या'नी इसराफ़ में कोई भलाई नहीं । तो उस शख्स ने जवाब दिया : لَا سَرَفَ فِي الْخَيْرِ या'नी भलाई के कामों में खर्च करने में कोई इसराफ़ नहीं ।²

महफ़िल में हज़ार शम्एं रोशन थीं

हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي नक्ल फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमाम शैख़ अबू अली मुहम्मद बिन क़ासिम रूज़बारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِي से मन्कूल है कि एक बुजुर्ग ने ज़ियाफ़त का एहतिमाम किया और उस में एक हज़ार शम्एं रोशन कीं, एक (ज़ाहिर बीन) शख्स ने उन से कहा कि आप ने इसराफ़ किया है ।

1.....تفسير كبير، ج 5، ص 125، دار احياء التراث العربي بيروت

2.....تفسير نسفي، ص 221، دار المعرفة بيروت

उन बुजुर्ग (जो कि रोशन ज़मीर थे उन्होंने) ने फ़रमाया : जाओ और हर वोह शम्अ जो मैं ने ग़ैरुल्लाह के लिये रोशन की हो, बुझा दो। उस ने बुझाने की कोशिश की मगर कोई एक शम्अ भी न बुझा सका।¹

हज़रते अल्लामा सय्यिद मुहम्मद बिन मुहम्मद हुसैनी जुबैदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي इस की शर्ह में फ़रमाते हैं : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में येह खर्च करना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को महबूब है और औलियाए किराम رَحْمَتُهُمُ اللهُ السَّلَام भी इसे महबूब रखते हैं इन औलियाए किराम رَحْمَتُهُمُ اللهُ السَّلَام के अहवाल मुख़लिफ़ होते हैं और निय्यतें नेक होती हैं।²

हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती वक़ारुद्दीन क़ादिरि عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : इसराफ़ के मा'ना येह हैं कि ना जाइज़ काम में रक़म खर्च की जाए या ऐसे काम में रक़म खर्च की जाए जिस का मक्सद सहीह न हो म-सलन शराब, सिनेमा, गाना वग़ैरा ना जाइज़ कामों में खर्च करना या अपने रुपै को दरिया में फेंक देना या नोटों को जला देना वग़ैरा येह सूरतें इसराफ़ की हैं। इस का उसूल येह है : “لَا خَيْرَ فِي الْإِسْرَافِ، وَلَا إِسْرَافٍ فِي الْخَيْرِ” या'नी इसराफ़ में नेकी नहीं है और नेकी में खर्च करना इसराफ़ नहीं है।”

① إحياء العلوم، ج ٢، ص ٢٦، دارصادر بيروت

② إتحاف السادة المتقين، ج ٥، ص ٢٨٥، دارالكتب العلمية بيروت

हमारी समझ में ये बात नहीं आती कि सिर्फ़ रबीज़ल अव्वल के महीने में चरागां करने और झन्डियों के लगाने पर ये लोग ए'तिराज़ क्यूं करते हैं ? शादियों और दीगर तक़रीबात के मवाक़ेअ पर जो चरागां होता है उस के बारे में कुछ नहीं कहते और अगर इसराफ़ के येही मा'ना हैं कि मुत्लक़न ज़रूरत से ज़ियादा खर्च करना इसराफ़ है तो येह मकान बनाना सब इसराफ़ होगा इस लिये कि झुग्गी (झोंपड़ी) में भी रहा जा सकता है, अच्छे और कीमती कपड़े बनवाना भी इसराफ़ होता इस लिये कि टाट, खदर वगैरा से भी सित्र पोशी हो सकती है, अच्छे खानों पर खर्च करना भी इसराफ़ होगा मोटे आटे की रोटी को चटनी या सिरके के साथ खाने से भी पेट भर सकता है, इन सब बातों में जब रुपिया सर्फ़ करना इस लिये इसराफ़ नहीं कि मक्सदे सहीह के लिये सर्फ़ किया जा रहा है अगर्चे ज़रूरत से ज़ियादा है। इसी तरह मीलाद के मौक़अ पर सर्फ़ करना इसराफ़ नहीं है कि अ-ज-मते मुस्तफ़ा صَلَّی اللّهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इज़हार करना मक्सूद है।¹

जानते हो क्यूं है रोशन आस्मां पर कहकशां

है किया हक़ ने चरागां ईंदे मीलादुन्नबी

(वसाइले बख़्शिश)

1.....वक़रूल फ़तावा, जि. 1, स. 155, बज़्मे वक़रुद्दीन, बाबुल मदीना कराची

एहसासे कम-तरी और इस का इलाज

अर्ज : एहसासे कम-तरी किसे कहते हैं ? नीज़ इस का इलाज भी तज्वीज़ फ़रमा दीजिये ।

इर्शाद : एहसासे कम-तरी का मतलब है अपने आप को दूसरों से कम-तर समझना और खुद ए'तिमादी का न होना । एहसासे कम-तरी का मरज़ उमूमन किसी काम में नाकामी के बाइस पैदा होता है या अपने से किसी बरतर की तरफ़ देखने से, चाहे वोह बर-तरी दीनी हो या दुन्यवी । दीनी व दुन्यवी बर-तरी वालों में से किस की तरफ़ देखना चाहिये और किस की तरफ़ नहीं, हदीसे पाक में इस की रहनुमाई फ़रमाई गई है, चुनान्चे हादिये राहे नजात, सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने आलीशान है : दो ख़स्लतें ऐसी हैं कि जिस में येह होंगी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपने नज़्दीक शाकिर व साबिर लिख देगा । इन में से एक येह है कि वोह दीन के मुआ-मले (या'नी इल्मो अमल) में अपने से बरतर (ऊपर वाले) की तरफ़ नज़र करे तो उस की पैरवी करे जब कि दूसरी येह है कि दुन्या के मुआ-मले में अपने से कमतर (नीचे वाले) की तरफ़ देखे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हम्द करे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे शाकिर व साबिर लिखेगा और जो अपने दीन में अपने से कम-तर को देखे और अपनी दुन्या में अपने से बरतर को देखे तो फ़ौत शुदा दुन्या पर ग़म करे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे न शाकिर

लिखे न साबिर ।”¹

मा'लूम हुवा कि दीनी मुआ-मलात में अपने से बरतर की तरफ़ देखना महमूद (अच्छ) है और दुन्यवी मुआ-मलात में अपने से बरतर की तरफ़ देखना मज़मूम (बुरा) है लिहाज़ा इन्सान को चाहिये कि वोह दीनी मुआ-मलात में अपने से ऊपर वाले की तरफ़ देखे और इस की पैरवी करे, उस जैसा बनने की कोशिश करे और दुन्यवी मुआ-मलात में अपने से नीचे वाले की तरफ़ देख कर अपने ऊपर **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम और एहसान को याद कर के शुक्र बजा लाए ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुन्यवी मुआ-मलात म-सलन मालो दौलत और शक्लो सूरत वगैरा में एहसासे कम-तरी का शिकार होने वालों को चाहिये कि वोह हदीसे पाक में बयान कर्दा तरीके के मुताबिक़ अपने इस मरज़ का इलाज करें चुनान्चे **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब, तबीबों के तबीब **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने इर्शाद फ़रमाया : “जब तुम में से कोई किसी ऐसे शख्स को देखे जिसे इस पर माल और सूरत में फ़ज़ीलत हासिल हो तो उसे चाहिये कि वोह अपने से कमतर पर भी नज़र डाले ।”²

1..... ترمذی، ج ۳، ص ۲۲۹، حدیث ۲۵۲۰، دار الفکر بیروت

2..... بخاری، ج ۳، ص ۲۴۴، حدیث ۶۳۹۰، دار الکتب العلمیة بیروت

इसी तरह किसी काम में नाकामी के सबब एहसासे कम-तरी का शिकार होने वालों को चाहिये कि वोह अपना इस तरह ज़ेहन बनाएं कि अगर उन्हें एक मर्तबा नाकामी का सामना करना पड़ा है तो ज़िन्दगी में कई बार उन्हें काम्याबियां भी तो नसीब हुई हैं। इस के इलावा हर वक़्त बा वुजू रहने की आदत डालिये कि बा वुजू रहने से जहां दीगर बे शुमार फ़वाइदो ब-रकात हासिल होते हैं वहीं एहसासे कम-तरी से भी नजात मिलती है।

सब से पहला रिसाला

अर्ज़ : आप ने अपनी ज़िन्दगी में सब से पहला रिसाला कौन सा तहरीर फ़रमाया ?

इर्शाद : मैं ने अपनी ज़िन्दगी में सब से पहला रिसाला “तज़्किरए इमाम अहमद रज़ा” ब सिल्लिसलए यौमे रज़ा तहरीर किया है। **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** 25 स-फ़रूल मुज़फ़्फ़र 1393 सि.हि. को मुझे येह रिसालए मुबा-रका तहरीर करने की सआदत हासिल हुई है।

तू ने बातिल को मिटाया ऐ इमाम अहमद रज़ा
 दीन का डंका बजाया ऐ इमाम अहमद रज़ा
 है ब-दरगाहे खुदा अत्तार आजिज़ की दुआ
 तुझ पे हो रहमत का साया ऐ इमाम अहमद रज़ा

(वसाइले बख़्शिश)

❁ बुरे ख़ातिमे से नजात कैसे हो ? ❁

अर्ज़ : बुरे ख़ातिमे से नजात क्यूंकर मुम्किन हो सकती है ?

इर्शाद : बुरे ख़ातिमे से नजात पाने के लिये हर दम गुनाहों से बचना और नेकियों में मशगूल रहना ज़रूरी है ताकि नेक काम करते हुए अच्छी हालत में मौत आए। हृदीसे पाक में है :
 اِنَّا بِالْاَعْمَالِ بِالْخَوَاتِيمِ या'नी आ'माल का दारो मदार ख़ातिमे पर है।¹ इस हृदीसे पाक के तहत मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَان फ़रमाते हैं : या'नी मरते वक़्त जैसा काम होगा वैसा ही अन्जाम होगा लिहाज़ा चाहिये कि बन्दा हर वक़्त ही नेक काम करे कि शायद वोही उस का आख़िरी वक़्त हो।² हर एक को हर वक़्त अपने ईमान की हिफ़ाज़त की फ़िक्क़र करनी चाहिये और बुरे ख़ातिमे से डरते रहना चाहिये क्यूं कि हम नहीं जानते कि हमारे बारे में **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की खुफ़्या तदबीर क्या है, न मा'लूम हमारा ख़ातिमा कैसा होगा ? हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی का फ़रमाने अ़ाली है : बुरे ख़ातिमे से अम्न चाहते हो तो अपनी सारी ज़िन्दगी **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की इताअत में बसर करो और हर हर गुनाह से बचो, लाज़िम्न

① بخاری، ج ۳، ص ۲۷۴، حدیث ۶۶۰۷، دار الکتب العلمیة بیروت

②میر آتول مناجیہ، ج. 1، ص. 95، جی یازل کور آن پبلی کیشنز
 مرکّز اولیا لاہور

तुम पर आरिफ़ीन जैसा ख़ौफ़ ग़ालिब रहे हत्ता कि इस के सबब तुम्हारा रोना धोना तवील हो जाए और तुम हमेशा ग़मगीन रहो। आगे चल कर मज़ीद फ़रमाते हैं : तुम्हें अच्छे ख़ातिमे की तय्यारी¹ में मशगूल रहना चाहिये। हमेशा **ज़िक्कुल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** में लगे रहो, दिल से दुन्या की महबूबत निकाल दो, गुनाहों से अपने आ'ज़ा बल्कि दिल की भी हिफ़ाज़त करो, जिस क़दर मुम्किन हो बुरे लोगों को देखने से भी बचो कि इस से भी दिल पर असर पड़ता है और तुम्हारा ज़ेहन उस तरफ़ माइल हो सकता है।²

शैतान दोस्तों की शक्ल में

हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي** फ़रमाते हैं : स-करात के वक़्त शैतान अपने चेलों को मरने वाले के दोस्तों और रिश्तेदारों की

1..... शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** ने कम वक़्त में आसानी के साथ दुन्या व आख़िरत बेहतर बनाने के लिये इस्लामी भाइयों को 72, इस्लामी बहनों को 63, त-ल-बए इल्मे दीन को 92, दीनी त़ालिबात को 83 और म-दनी मुन्नो और मुन्नियों को 40 म-दनी इन्आमात ब सूरते सुवालात अता फ़रमाए हैं। रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए म-दनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा। (शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

2..... **أَحْيَاءُ الْعُلُومِ**, ج 4, ص 219-221, مُمْلَخَصاً

शक्लों में ले कर आ पहुंचता है। ये सब कहते हैं : भाई ! हम तुझ से पहले मौत का मज़ा चख चुके हैं, मरने के बा'द जो कुछ होता है उस से हम अच्छी तरह वाकिफ़ हैं। अब तेरी बारी है, हम तुझे हमदर्दना मशवरा देते हैं कि तू यहूदी मज़हब इख़्तियार कर ले कि येही दीन **अल्लाह** तआला की बारगाह में मक्बूल है। अगर मरने वाला उन की बात नहीं मानता तो इसी तरह दूसरे अहबाब के रूप में शयातीन आ आ कर कहते हैं : तू नसारा का मज़हब इख़्तियार कर ले क्यों कि इसी मज़हब ने (हज़रते) मूसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के दीन को मन्सूख़ किया था। यूँ ही अइज़ज़ा व अक़िबा (रिश्तेदारों) की शक्लों में जमाअतें आ कर मुख़्तलिफ़ बातिल फ़िर्कों को क़बूल कर लेने के मशवरे देती हैं। तो जिस की क़िस्मत में हक़ से मुन्हरिफ़ होना (या'नी फिर जाना) लिखा होता है वोह उस वक़्त डग-मगा जाता और बातिल मज़हब इख़्तियार कर लेता है।¹ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारे हाले ज़ार पर करम फ़रमाए, नज़अ के वक़्त न जाने हमारा क्या बनेगा ! हम दुआ करते हैं ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नज़अ के वक़्त हमारे पास शयातीन न आएँ बल्कि रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم करम फ़रमाएं।

नज़अ के वक़्त मुझे जल्दिए महबूब दिखा
तेरा क्या जाएगा मैं शाद मरूंगा या रब !

1..... الدُّرَّةُ الْفَاجِرَةُ، ص ۵۱۱، مُلَخَّصاً، دَارُ الْفِكْرِ بِيْرُوت

मुसल्मां है अत्तार तेरी अता से
हो ईमान पर ख़ातिमा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह ﷻ की रहमत से
हरगिज़ मायूस न हों दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से
वाबस्ता हो कर आशिकाने रसूल के हमराह सुन्नतों की
तरबियत के म-दनी काफ़िलों में सफ़र को अपना मा'मूल
बना लीजिये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ ﷻ ईमान की हिफ़ाज़त का ज़ेह्न
बनता रहेगा । जब ज़ेह्न बनेगा तो एहसास पैदा होगा,
रिक्कत मिलेगी और दुआ के लिये हाथ उठेंगे तो फिर
बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में यूँ अर्ज करेंगे :

तू ने इस्लाम दिया, तू ने जमाअत में लिया

तू करीम अब कोई फिरता है अतिव्या तेरा

(हदाइके बख़्शिश)

❦ ख़ातिमा बिलख़ैर के पांच अवराद ❦

अर्ज : ईमान पर ख़ातिमे के लिये चन्द अवराद इर्शाद फ़रमा दीजिये ।

इर्शाद : एक शख्स मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत,
मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा
ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की बारगाह में हाज़िर हो कर ईमान पर
ख़ातिमा बिलख़ैर के लिये दुआ का तालिब हुवा तो आप
رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ने उस के लिये दुआ फ़रमाई और इर्शाद
फ़रमाया :

(1) (रोज़ाना) 41 बार सुब्ह को **يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ** (तरजमा : ऐ हमेशा ज़िन्दा रहने वाले ! ऐ हमेशा काइम रहने वाले ! कोई मा'बूद नहीं मगर तू) अव्वल व आखिर दुरूद शरीफ़ पढ़ लिया करें ।¹

(2) सोते वक़्त अपने सब अवराद के बा'द **सूरए काफ़िरून** रोज़ाना पढ़ लिया कीजिये इस के बा'द कलाम वगैरा न कीजिये । हां अगर ज़रूरत हो तो कलाम (बात) करने के बा'द फिर **सूरए काफ़िरून** तिलावत कर लीजिये कि खातिमा इसी पर हो, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** खातिमा ईमान पर होगा ।

(3) तीन बार सुब्ह और तीन बार शाम इस दुआ का विर्द रखिये : **اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعُوْذُ بِكَ مِنْ اَنْ تُشْرِكَ بِكَ شَيْئًا نُّعَلِّمُهُ وَنَسْتَغْفِرُكَ : بِسْمِ اللّٰهِ نَعْلَمُهُ** (या'नी ऐ **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** हम तेरी पनाह मांगते हैं इस से कि जान कर हम तेरे साथ किसी चीज़ को शरीक करें और हम उस से इस्तिग़फ़ार करते हैं जिस को नहीं जानते)²

(4) तफ़्सीरे सावी में है : जो कोई हज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र **عَلَيْ نَبِيِّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** का नाम मअ़ कुन्यत व व-लदिय्यत व लक़ब याद रखेगा, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** उस का ईमान पर खातिमा होगा । आप का नाम मअ़ कुन्यत व व-लदिय्यत

①.....अल वज़ी-फ़तुल करीमा, स. 21, मक-त-बतुल मदीना, बाबुल मदीना कराची

②.....अल वज़ी-फ़तुल करीमा, स. 17

व लक़ब इस तरह है : अबुल अब्बास बल्या बिन मल्कानल खिज़्र ।¹

بِسْمِ اللَّهِ عَلَى دِينِي ، بِسْمِ اللَّهِ عَلَى نَفْسِي وَوُلْدِي وَ أَهْلِي وَمَالِي (5)
(तरजमा : अल्लाह तआला के नाम की ब-र-कत से मेरे दीन, जान, औलाद और अहलो माल की हिफ़ाज़त हो) सुब्ह व शाम तीन तीन बार पढ़िये, दीन, ईमान, जान, माल, बच्चे सब महफूज़ रहें ।² (गुरुबे आफ़ताब से सुब्हे सादिक तक रात और आधी रात ढले से सूरज की पहली किरन चमकने तक सुब्ह है)³

दुन्या में हर आफ़त से बचाना मौला !
उक्बा में न कुछ रन्ज दिखाना मौला !
बैठूं जो दरे पाके पयम्बर के हुज़ूर
ईमान पे उस वक़्त उठाना मौला !

(हदाइके बख़्शिश)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ईमान पर खातिमे के लिये अच्छी सोहबत अपनाना और बुरी सोहबत से खुद को बचाना इन्तिहाई ज़रूरी है । اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता होने और आशिकाने रसूल की सोहबत में रहने वालों को भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रहमत

① تَفْسِيرُ صَاوِي، ج ٢، ص ١٢٠، دار الفكر بيروت

② अल वजी-फ़तुल करीमा, स. 71

③ ऐज़न, स. 12, माखूज़न

से मरते वक्त कलिमए तय्यिबा नसीब हो जाता है इस ज़िम्न में एक म-दनी बहार मुला-हज़ा कीजिये :

चुनान्चे बरोज़ इतवार 26 रबीउन्नूर शरीफ़ 1420 सि.हि. ब मुताबिक़ 11.7.1999 ब वक्ते दोपहर पंजाब के मशहूर शहर लाला मूसा की एक मसरूफ़ शाहराह पर किसी ट्रालर ने दा'वते इस्लामी के एक ज़िम्मेदार, मुबल्लिगे दा'वते इस्लामी मुहम्मद मुनीर हुसैन अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِی (साकिन महल्ला इस्लाम पूरा लाला मूसा) को बुरी तरह कुचल दिया । यहां तक कि उन के पेट की जानिब के ऊपर और नीचे का हिस्सा अलग अलग हो गया । मगर हैरत की बात येह थी कि फिर भी वोह ज़िन्दा थे और हैरत बालाए हैरत येह कि हवास इतने बहाल थे कि बुलन्द आवाज़ से اللَّهُ يَا رَسُولَ اللَّهِ और الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ पढ़े जा रहे थे । लाला मूसा के अस्पताल में डॉक्टरों के जवाब दे देने पर उन्हें शहर गुजरात के अज़ीज़ भट्टी अस्पताल ले जाया गया । उन्हें अस्पताल ले जाने वाले इस्लामी भाई का ब क़सम बयान है, الْحَمْدُ لِلَّهِ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ मुहम्मद मुनीर हुसैन अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِی की ज़बान पर पूरे रास्ते इसी तरह बुलन्द आवाज़ से दुरूदो सलाम और कलिमए तय्यिबा का विर्द जारी था । येह म-दनी मन्ज़र देख कर डॉक्टर्ज़ भी हैरानो शश्वर थे कि !

येह जिन्दा किस तरह हैं ! और हवास इतने बहाल कि बुलन्द आवाज़ से दुरूदो सलाम और कलिमए तय्यिबा पढ़े जा रहे हैं ! उन का कहना था कि हम ने अपनी जिन्दगी में ऐसा बा हौसला और बा कमाल मर्द पहली मर्तबा ही देखा है । कुछ देर बा'द वोह खुश नसीब आशिके रसूल मुहम्मद मुनीर हुसैन अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِ ने बारगाहे महबूबे बारी में बसद बे करारी इस तरह इस्तिगासा किया :

या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! आ भी जाइये ।

या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! मेरी मदद फ़रमाइये ।

या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! मुझे मुआफ़ फ़रमा दीजिये ।

इस के बा'द बा आवाजे बुलन्द “لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ” पढ़ते हुए सदा के लिये खामोश हो गए । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मग़िफ़रत हो ।

वासिता प्यारे का ऐसा हो कि जो सुन्नी मरे

यूं न फ़रमाएं तेरे शाहिद कि वोह फ़ाजिर गया

अर्श पर धूमें मचें वोह मोमिने सालेह मिला

फ़र्श से मातम उठे वोह तय्यिबो ताहिर गया

(हदाइके बख़्शिश)

येह वाकिआ उन दिनों मुख़्तलिफ़ अख़्बारात ने शाएअ किया था । مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ मुबल्लिगे दा'वते इस्लामी मुहम्मद

मुनीर हुसैन अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِي दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदार मुबल्लिग़ थे और हादिसे के एक रोज़ क़ब्ल ही आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों की तरबियत के म-दनी काफ़िले से सफ़र कर के लौटे थे । मर्हूम रोज़ाना सदाए मदीना¹ भी लगाते थे । اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ऐसा लगता है मुहम्मद मुनीर हुसैन अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِي की ख़िदमते दा'वते इस्लामी रंग लाई और उन्हें आख़िरी वक़्त कलिमा नसीब हो गया । जिस को मरते वक़्त कलिमा नसीब हो जाए اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ उस का आख़िरत में बेड़ा पार है चुनान्वे नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत, मालिके कौसरो जन्नत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهِمْ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस का आख़िरी कलाम “لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ” हो वोह दाख़िले जन्नत होगा ।²

फ़ज़्लो करम जिस पर भी हुवा
लब पर मरते दम कलिमा
जारी हुवा, जन्नत में गया
لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

..... 2 ابو داؤد، ج 3، ص 255، حدیث 3116

①..... दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल में नमाज़े फ़ज़्र के लिये मुसल्मानों को जगाना “सदाए मदीना लगाना” कहलाता है । (शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

② ابو داؤد، ج 3، ص 255، حدیث 3116

घर पर म-दनी काफ़िला ठहराने की एह्तियातें

अर्ज़ : किसी के घर पर म-दनी काफ़िला ठहराने की सूरत में क्या क्या एह्तियातें की जाएं ?

इर्शाद : हत्तल इम्कान मस्जिद या जा-ए नमाज़ ही में म-दनी काफ़िला ठहराने की तरकीब की जाए। ब अम्रे मजबूरी किसी के घर में म-दनी काफ़िला ठहराना पड़े तो पर्दे का सख़्त एहतिमाम रहे, घर को किसी तरह का नुक़सान न हो, साहिबे ख़ाना से बे जा सुवालात करें न फुज़ूल तब्सिरे करें म-सलन येह कितने का लिया ? क्यूं लिया ? येह यहां क्यूं रखा है ? सफ़ाई क्यूं नहीं वगैरा नीज़ घर वालों पर किसी तरह बोझ भी न बनें, अपने खाने पीने का खुद एहतिमाम करें। वोह दें तो भी हत्तल इम्कान महब्बत से समझा कर टालने की कोशिश करें। इस तरह एह्तियात करेंगे तो साहिबे ख़ाना पर बहुत अच्छा असर पड़ेगा और वोह आयिन्दा भी **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** आप को खुश आ-मदीद (Welcome) कहेगा जब कि बे एह्तियाती की सूरत में उस के बदज़न होने का क़वी अन्देशा है।

बवासीर के इलाज के लिये इन्जीर के इस्ति'माल का तरीक़ा

अर्ज़ : बवासीर के अस्बाब नीज़ इलाज के लिये इन्जीर के इस्ति'माल का तरीक़ा भी बता दीजिये।

इर्शाद : बवासीर के तीन अहम अस्बाब हैं : (1) पुरानी कब्ज़ (2) तब्खीरे मे'दा (3) कुर्सी नशीनी इन चीज़ों से दुबुर (पाख़ाने के मक़ाम) के आस पास की अन्दरूनी रगों में ख़ून का ठहराव हो जाता है जिस के सबब वोह रंगें फूल कर मस्सों (Pilec) की सूरत में बाहर निकल आती हैं या अन्दर की तरफ़ रहती हैं : बा'ज़ लोगों की बवासीर ब-यक वक़्त अन्दरूनी और बैरूनी दोनों तरफ़ होती है । जिसे बवासीर हो उसे चाहिये कि वोह इन्जीर का इस्ति'माल करे कि येह बवासीर और जोड़ों के दर्द को ख़त्म करता है ।

इन्जीर के इस्ति'माल का तरीक़ा येह है कि पांच अदद इन्जीर के टुकड़े कर के मुनासिब मिक्दार में दूध के अन्दर पका लीजिये और ठन्डा कर के सोते वक़्त खा लीजिये । येह ख़ूनी बवासीर का मुजर्रब (या'नी तजरिबा शुदा) इलाज है إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى ख़ून बन्द हो जाएगा । ता हुसूले शिफ़ा जारी रखिये अगर मुस्तक़िल इस्ति'माल करें तब भी फ़ाएदा ही फ़ाएदा है । इन्जीर की ता'दाद कम ज़ियादा भी कर सकते हैं ।

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है : “हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में इन्जीर शरीफ़ से भरा एक थाल पेश किया गया । आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उस में से तनावुल फ़रमाया और सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से फ़रमाया : खाओ, अगर मैं

कहूं कि जन्नत से कोई फल उतरा तो वोह येही है कि जन्नत का मेवा बिगैर गुठली के होगा पस इसे खाओ कि बिला शुबा येह बवासीर को ख़त्म करता है और गन्धिया (या'नी जोड़ों के दर्द) में मुफ़ीद है।”¹

ख़ारिश और दर्द वाली बवासीर में इन्जीर खाने का तरीक़ा

अर्ज़ : बवासीर में अगर ख़ून न आता हो मगर ख़ारिश और दर्द होता हो तो इस में इन्जीर किस तरह खाएं ?

इर्शाद : अगर तकलीफ़ ज़ियादा हो तो शहद के शरबत (या'नी शहद मिले पानी) के साथ रोज़ाना सुब्ह नहार मुंह पांच अदद खुश्क इन्जीर खा लें। मुसल्सल इस तरीक़े पर अमल करने से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** चार माह से ले कर दस माह के अर्से में मस्से खुश्क हो जाएंगे। (येह तरीक़े इलाज ख़ूनी बवासीर के लिये भी मुफ़ीद है) अगर बवासीर में तकलीफ़ कम और बद हज़्मी ज़ियादा हो तो हर बार खाना खाने से आधा घन्टा कब्ल खुश्क इन्जीर तीन अदद खाएं। अगर सिर्फ़ पेट में बोज़ होता हो तो हर बार खाना खाने के बा'द तीन अदद इन्जीर तनावुल फ़रमा लीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** फ़ाएदा होगा।

दफ़ू बवासीर का वज़ीफ़ा

अर्ज़ : बवासीर दूर करने के लिये कोई वज़ीफ़ा भी इर्शाद फ़रमा दीजिये।

مدینہ ۱..... الطب النبوی لابی نعیم، ج ۲، ص ۲۸۵، دار ابن حزم بیروت

इर्शाद : आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजहिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ ने ख़ूनी और बादी दोनों किस्म की बवासीर से नजात के लिये एक बहुत उम्दा अमल इर्शाद फ़रमाया है, चुनान्वे जनाब सय्यिद अय्यूब अली साहिब का बयान है कि एक साहिब ने हाज़िर हो कर अर्ज़ की, कि मुझे बवासीर का बहुत तक्लीफ़ देह मरज़ है। इर्शाद फ़रमाया : हमारे यहां मज्मूअ आ'माल में एक अमल लिखा है, उस पर अमल कीजिये إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ बहुत जल्द शिफ़ा होगी। बवासीर ख़ूनी हो या बादी, दोनों के लिये (येह अमल) मुफ़ीद है।

हर रोज़ दो रकअत नमाज़ पढ़े। पहली रकअत में बा'द अल हम्द शरीफ़, सूरए اَلَمْ نَشْرَحْ और दूसरी रकअत में बा'द अल हम्द शरीफ़, सूरए फ़ील पढ़े। बा'द सलाम 70 बार कहे :

أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ رَبِّي مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ سُبْحَنَ اللَّهِ
या यूँ कहे : **أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ سُبْحَنَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ رَبِّي** चन्द रोज़ की मुदा-वमत में (या'नी बिगैर नागा किये पढ़ने से) मरज़ दफ़अ हो जाएगा।¹

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये और सुन्नतों की तरबियत के

1..... हयाते आ'ला हज़रत, जि. 3, स. 103, मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची

म-दनी काफ़िलों में सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये कि **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** म-दनी काफ़िलों में आशिक़ाने रसूल की सोहबत में रह कर इन के कुर्ब में मांगी जाने वाली दुआओं से भी बीमारियां दूर होती और मुरादें बर आती हैं। आप की तरगीब व तहरीस के लिये म-दनी काफ़िले में सफ़र की ब-र-कत से अन्दरूनी अमराज़ से दोचार एक मरीज़ की शिफ़ायाबी की म-दनी बहार पेश की जाती है चुनान्चे एक इस्लामी भाई का कुछ इस तरह बयान है कि मैं एक अर्से से बा'ज़ अन्दरूनी अमराज़ का शिकार था मरज़ की शिद्दत का येह आलम था कि जब भी सोता आज़्माइश हो जाती। इलाज पर कसीर रक़म खर्च करने के बा वुजूद इफ़का न हुवा, मैं इस मरज़ से तंग आ चुका था। मैं ने जब सुना कि म-दनी काफ़िलों में दुआएं क़बूल होती हैं तो हिम्मत कर के सुन्नतों की तरबियत के म-दनी काफ़िले का मुसाफ़िर बन गया। **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** म-दनी काफ़िले में सफ़र के दौरान मैं ने दुआ की और इस की ब-र-कत से मेरा मरज़ ऐसा ख़त्म हुवा कि गोया कभी था ही नहीं !

गर कोई मर्ज़ है तो मेरी अर्ज़ है

पाओगे राहतें काफ़िले में चलो

इन्जीर के फ़वाइद

अर्ज़ : बवासीर के इलाज के इलावा भी क्या इन्जीर के फ़वाइद हैं ?

इर्शाद : क्यूं नहीं ! नहार मुंह इन्जीर खाने के अजीबो ग़रीब फ़वाइद

हैं। येह आंतों को खोल कर पेट से हवा निकालता है इस के साथ अगर बादाम भी खा लिये जाएं तो पेट की अक्सर बीमारियां दूर हो जाती हैं। तफ़्सीरे अबुस्सऊद में पारहे 30 सू-रतुत्तीन की आयत नम्बर 1 ﴿وَالَّذِينَ الرَّيْثُونُ﴾ (तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : इन्जीर की क़सम और जैतून) के तहत है : इन्जीर शरीफ़ ख़वासे जलीला का हामिल है, येह मुबारक फल है जिस में से कोई शै फ़ालतू (या'नी छिल्का और गुठली) नहीं, हलकी और जल्द हज़्म होने वाली ग़िज़ा और कसीर मनाफ़ेअ़ वाली दवा है, येह तबीअत में नरमी पैदा करता है, (जमे हुए) बल्ग़म को हल (कर के ख़ारिज) करता है, गुर्दों को साफ़ करता है, मसाने की पथरी को ज़ाइल करता है, बदन को फ़र्बा करता है और तिल्ली और जिगर की बन्दिशों को खोलता है। हज़रते सय्यिदुना अली बिन मूसा रज़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है : इन्जीर मुंह की बदबू को ज़ाइल करता है, बालों को लम्बा करता और फ़ालिज से महफूज़ रखता है।¹

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ!

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ



1 تفسیر ابو السعد، ج ۵، ص ۸۸۳ ملقطاً، دار الفکر بیروت

फ़ेहरिस

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	बुरे ख़ातिमे से नजात कैसे हो ?	15
अल्लाह मियां कहना कैसा ?	2	शैतान दोस्तों की शक्ल में	16
जन्नत में बोली जाने वाली ज़बान	2	ख़ातिमा बिलखैर के पांच	
मरने के बा'द अ-रबी ज़बान में		अवराद	18
सुवाल जवाब	3	घर पर म-दनी काफ़िला	
सब से अफ़ज़ल ज़बान	7	ठहराने की एहतियातें	24
चरागां पर ज़रे कसीर खर्च		बवासीर के इलाज के लिये इन्जीर	
करना कैसा ?	8	के इस्ति'माल का तरीका	24
महफ़िल में हजार शम्पूं रोशन थीं	9	ख़ारिश और दर्द वाली बवासीर	
एहसासे कम-तरी और इस		में इन्जीर खाने का तरीका	26
का इलाज	12	दफ़् बवासीर का वज़ीफ़ा	26
सब से पहला रिसाला	14	इन्जीर के फ़वाइद	28



सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ तब्लोगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा 'वते इस्लामी के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निव्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिकाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में ब निव्यते सवाब सुन्नतों की तरबियत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए म-दनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़त करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है" اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये "म-दनी इन्आमात" पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये "म-दनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ



मक-त-बतुल मदीना की शाखें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफिस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

हुब्ली : A.J. मुडोल कोम्प्लेक्स, A.J. मुडोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®

दा 'वते इस्लामी



फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net